



0755CH15

पञ्चदशः पाठः

# लालनगीतम्



उदिते सूर्ये धरणी विहसति ।  
 पक्षी कूजति कमलं विकसति ॥1॥

नदिति मन्दिरे उच्चैर्दक्का ।  
 सरितः सलिले सेलति नौका ॥2॥

पुष्पे पुष्पे नानारङ्गाः ।  
 तेषु डयन्ते चित्रपतङ्गाः ॥3॥

वृक्षे वृक्षे नूतनपत्रम् ।  
 विविधैर्वर्णैर्विभाति चित्रम् ॥4॥

धेनुः प्रातर्यच्छति दुग्धम् ।  
 शुद्धं स्वच्छं मधुरं स्निग्धम् ॥5॥

गहने विपिने व्याघ्रो गर्जति ।  
 उच्चैस्तत्र च सिंहः नर्दति ॥6॥

हरिणोऽयं खादति नवघासम् ।  
 सर्वत्र च पश्यति सविलासम् ॥7॥

उष्ट्रः तुङ्गः मन्दं गच्छति ।  
 पृष्ठे प्रचुरं भारं निवहति ॥8॥

घोटकराजः क्षिप्रं धावति ।  
 धावनसमये किमपि न खादति ॥9॥

पश्यत भल्लुकमिमं करालम् ।  
 नृत्यति थथथै कुरु करतालम् ॥10॥

-सम्पदानन्दमिश्रः

## ◆ शब्दार्थः ◆

|              |   |                            |              |
|--------------|---|----------------------------|--------------|
| उदिते        | - | उगने पर, निकलने पर         | on the rise  |
| नदति         | - | आवाज/ध्वनि करता है         | rings        |
| उच्चैः       | - | ऊँची आवाज में, जोर से      | loudly       |
| ढक्का        | - | नगाड़ा                     | drum         |
| सेलति        | - | डगमगाती है, हिलती झुलती है | shakes       |
| डयन्ते       | - | उड़ते हैं                  | fly          |
| चित्रपतङ्गाः | - | तितलियाँ                   | butterflies  |
| वर्णैः       | - | रंगो से                    | with colours |
| विभाति       | - | सुशोभित होता है            | shines       |
| स्निधम्      | - | मुलायम, चिकना              | soft         |
| गहने         | - | घने                        | dense        |
| विपिने       | - | जंगल में                   | in forest    |
| नर्दति       | - | दहाड़ता है                 | roars        |
| तुङ्गः       | - | ऊँचा                       | lofty, high  |
| निवहति       | - | ढोता है                    | carries      |
| क्षिप्रम्    | - | जलदी से, तेजी से           | swiftly      |
| भल्लुकः      | - | भालू                       | bear         |
| करालम्       | - | भयानक                      | ferocious    |
| करतालम्      | - | ताली                       | clapping     |





1. गीतम् सस्वरं गायता।

2. एकपदेन उत्तरत-

(क) का विहसति?

(ख) किम् विकसति?

(ग) व्याघ्रः कुत्र गर्जति?

(घ) हरिणः किं खादति?

(ङ) मन्दं कः गच्छति?

3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) सलिले नौका सेलति।

(ख) पुष्पेषु चित्रपतञ्जः डयन्ते।

(ग) उष्ट्रः पृष्ठे भारं वहति।

(घ) धावनसमये अश्वः किमपि न खादति।

(ङ) सूर्ये उदिते धरणी विहसति।

4. मञ्जूषातः समानार्थकपदानि चित्वा लिखत-

| पृथिवी | देवालये | जले | वने | मृगः | भयङ्करम् |
|--------|---------|-----|-----|------|----------|
|--------|---------|-----|-----|------|----------|

|        |       |         |       |
|--------|-------|---------|-------|
| धरणी   | ..... | विपिने  | ..... |
| करालम् | ..... | हरिणः   | ..... |
| सलिले  | ..... | मन्दिरे | ..... |

**5. विलोमपदानि मेलयत-**

|             |            |
|-------------|------------|
| मन्दम्      | नूतनम्     |
| नीचैः       | स्निधम्    |
| कठोरः       | पर्याप्तम् |
| पुरातनम्    | उच्चैः     |
| अपर्याप्तम् | क्षिप्रम्  |

**6. उचितकथनानां समक्षम् ‘आम्’ अनुचितकथनानां समक्षं ‘न’ इति लिखत-**

- |                                   |                      |
|-----------------------------------|----------------------|
| (क) धावनसमये अश्वः खादति।         | <input type="text"/> |
| (ख) उष्ट्रः पृष्ठे भारं न वहति।   | <input type="text"/> |
| (ग) सिंहः नीचैः क्रोशति।          | <input type="text"/> |
| (घ) पुष्पेषु चित्रपतङ्गाः डयन्ते। | <input type="text"/> |
| (ङ) वने व्याघ्रः गर्जति।          | <input type="text"/> |
| (च) हरिणः नवधासम् न खादति।        | <input type="text"/> |

**7. अथोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत-**

|                  |                   |   |             |
|------------------|-------------------|---|-------------|
| यथा- चित्रपतङ्गः | (प्रथमा-बहुवचने)  | - | चित्रपतङ्गः |
| भल्लुकः          | (तृतीया-एकवचने)   | - | .....       |
| उष्ट्रः          | (पञ्चमी-द्विवचने) | - | .....       |
| हरिणः            | (सप्तमी-बहुवचने)  | - | .....       |
| व्याघ्रः         | (द्वितीया-एकवचने) | - | .....       |
| घोटकराजः         | (सम्बोधन-एकवचने)  | - | .....       |



रुचिरा - द्वितीयो भागः

8. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



खगाः  
डयन्ते

विकसन्ति  
सूर्यः

कमलानि  
चित्रपतङ्गाः

उदेति  
कूजन्ति

क्रीडन्ति  
बालाः